[श्री ओम प्रकाश त्यागी

यह कह कर ले आया जाता है कि हम तुम्हें मजदूरी दिलायेंगे। तीन तीन रुपये के हिसाब से उनको मजदूरी एडवांस दे दी जाती है और इस प्रकार से एक षडयंत्र रच कर उनको यहा ले आया जाता है। ठेकेदार भी मजदूरो की मजदूरी मे से पैसा लेता है और जो भट्टा मालिक होता है वह क्या करता है कि उनको आटे के रूप मे और चावल के रूप मे खर्चा दे देता है और अपने हिसाब मे सब खर्चा लिख लेता है। आखिर जब सीजन समाप्त होता है तब हिसाब करता है। आपको सुन कर आश्चर्य होगा कि हिसाब निकालने के बाद उनको बता दिया जाता है कि उनकी तरफ और रुपया निकलता है और उनको तनख्वाह देने के बजाय उनके खिलाफ और रुपया निकाल दिया जाता है और रुपया निकालने के बाद यह कह दिया जाता है कि या तो वह रुपया अदा कर दे नही तो उनके परिवार के लोगो को नही जाने दिया जायेगा और परिवार के लोगो को जबर्दस्ती रख लिया जाता है। यह इसलिए भी किया जाता है ताकि अगले सीजन मे वे लोग काम करने के लिए आये। वहा पर रहने का जो मालिक लोग उनका खर्चा करते है उस खर्चे मे और झूठा खर्चा बना कर और जोड कर उनके जिम्मे पैसा निकाल दिया जाता है। वे बेचारे अनपढ लोग होते है और हिसाब किताब नही जानते है। कुछ मजदूर उस गुलामी मे से निकलने की कोशिश करते है तो उनके परिवार वालो को होस्टेजिज के रूप मे रख लिया जाता है, जो मालिक है चाहे वहा काम न भी हो तो भी उनको रख लेता है। इस प्रकार वे बेचारे जिन्दगी भर उनके चगुल से निकल नही पाते है। वे राजस्थान आदि हिस्सो मे जाते है और जो वहा मनी लैंडर होता है, धनी लोग होते है उन से कर्जा लेकर आते है ऊची दर पर और यहा कर्जा चुकाने की कोशिश करते है। इस प्रकार से उनके साथ अन्याय हो रहा है। आपने पाच रुपया मजदूरी देने का कानून बनाया है लेकिन उनको नही मिल रही है। यह अन्याय उनके साथ हो रहा है, कोई योजना नही है। उनकी तरफ से आवाज उठाने वाला कोई नही है। उनकी यूनियन नही है। गवर्नमेंट की तरफ से कोई मशीनरी नही बनाई गई है जो जाच करे। मैं प्रार्थना करता हूं कि उनकी तरफ आपका ध्यान जाये। इन मजदूरो ने बोट क्लब पर आ कर प्रदर्शन भी किया था, वे वहा पडे रहे, उनके बीबी बच्चे पडे रहे लेकिन उनकी सुनवाई नही हुई। मैं प्रार्थना करता हू कि इन मजदूरो को आप बधक प्रथा से मुक्त करे और बाकायदा उनको कानून के हिसाब से मजदूरी दिलाए। इसके बारे मे कुछ न कुछ व्यवस्था सरकार की ओर से होनी चाहिए।

(IV) HARDSHIPS FACED BY TOBACCO GROWERS IN ANDHRA PRADESH

SHRI SAMAR MUKHERJEE (Howrah) Sir, under rule 377 of the Rules of Procedure and Conduct of Business of the Lok Sabha, I want to raise the following urgent issue and request that the Minister concerned may make a statement on that.

The tobacco growers in Andhra Pradesh, particularly in areas like Guntur, Krishna, Nellore and Khammam districts where Virginia tobacco is grown, are suffering a lot since the tobacco traders in general, and the monopoly traders like ILTD etc in particular, are refusing to purchase the stock They are compelling the growers to sell at a distress price, which means only 50 per cent of the normal price The growers who are already faced with a terrible loss due to the cyclone, are now put to further ruin by the traders They refuse to purchase tobacco at the indicated prices fixed by the Tobacco Board since they are not statutory They also refuse to limit grading only to eight categories, and want to grade as they like Since the Government does not provide funds to the Tobacco Board to purchase stocks at a fair price in season and dispose it of later, the gro-

wer is not protected at all. Taking advantage of this, the traders are forcing the growers to sell at distress prices.

This year, the traders have delayed the opening of the market. Even now, though they have formally opened, they are offering low prices. The price for a particular grade which used to sell at Rs. 1000 is now Rs. 500. So, the Government has to take steps immediately to protect the growers by taking their stocks with advance payment and compelling the traders to purchase the stocks at fair prices and if they refuse, their licences should be cancelled.

So many telegrams and messages have come. It is a very serious situation. I appeal to the Government to take note of it and to to the rescue of the growers immediately.

(v) Reported Refusal by sugar Mills to buy sugarcane at officially fixed rate.

श्री वसन्त साठे (अकोला) : अध्यक्ष जी, मैं इस सदन का और सरकार का ध्यान एक बहुत ही गम्भीर विषय की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। परसों मैं यहां गाजियाबाद गया था और वहां के लोग और उस इलाके के लोग इतने चिन्तित हैं गन्ने के जो दाम एकाएक घट गये हैं। एक बहुत बड़ी मिल, सरस्वती शुगर मिल बन्द हो गई है। श्रम मन्त्री जी ध्यान दें, जो निर्धारित दाम थे 13 रु० 50 पैसे कानून से तय हुए, वह भी नहीं देते हैं। तो आप कानून से उनको कम्पैल कर सकते हैं, यहां तक कि उनकी मिल को टेक ओवर करने की भी आपके पास ताकत है। लेकिन मिल मालिक कहते हैं कि जनता सरकार तो हमारी सरकार है। हमने इनको लाखों रुपये दिये हैं यह हमारे खिलाफ क्या कार्यवाही कर सकते हैं। 13 रु० 50 पैसे दाम देने को वह तैयार नहीं हैं। खड़ा का खड़ा गन्ना, ईख सूख रही है। बहुत परेशान हैं किसान। आजू बाजू के किसान जो जय जयकार मनाने के लिये, किसान दिवस मनाने के लिये 23 अक्तूबर को यहां आये थे, आज वह किसान नारा लगा रहे हैं, "अकोला लो, गन्ना छः, और बोलेगा चरण सिंह की जय। पाती सात और गन्ना छः। जय जनता की बोलिये गन्ना मुफ्त तोलिये। इन्दिरा जी का राज था तो गन्ना बिका 18 था। इन्दिरा गांधी आयेगी, फिर वही भाव लायेगी।" यह पर्चे में छपा है। यह चौधरी चरण सिंह के काले कारनामे का नोटिस होगा तो मुझे नहीं मालूम। 70 लाख टन गन्ना पैदा हुआ। अब कहा जा रहा है किसान को कि क्यों गन्ना ज्यादा पैदा किया? भुगतो। तो ज्यादा गन्ना पैदा करना यह भी गुनाह हो गया। ज्यादा गन्ना पैदा करो तो ज्यादा शक्कर पैदा होगी और उसको विदेशों में भेज कर विदेशी मुद्रा कमा सकते हैं। तो किसान ने अच्छा किया या बुरा किया? क्या सरकार की अक्ल का दिवाला पिट गया जो किसान को यह कहा जाय कि क्यों ज्यादा पैदा किया? मरो। तो यह बात कुछ मेरे समझ में नहीं आ रही है। आज वह क्या कहते हैं— अच्छा भइया हमने ज्यादा किया तो सो छोड़ो, पिछले साल मिलों ने जितना लिया था 65 लाख टन, उतना तो लेंगे।

इण्डस्ट्रीज मिनिस्टर और लेबर मिनिस्टर दोनों मिल कर इस मिल को तो कम-से-कम कब्जे में ले कि खाली पैसा ही लेंगे? मिल ले। आप किसानों को दाम दिलाइये, नहीं तो यह किसान दिवस मनाने वाले किसान यहां आयेंगे दूसरा दिवस मनाने के लिये। सोचिये,

I hope, this Government will take note of this. Otherwise, tomorrow you must not blame me that 'you did not gring this to the notice of the Governemnt'.